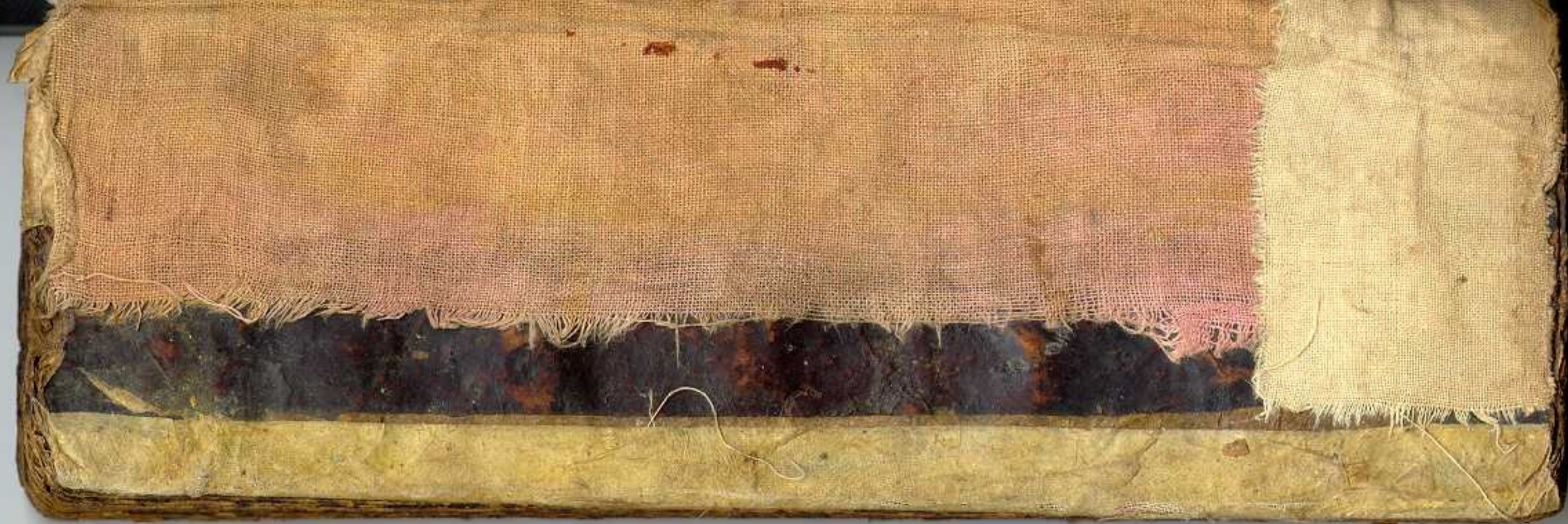


3. 10th. 13th. 14th.

8241

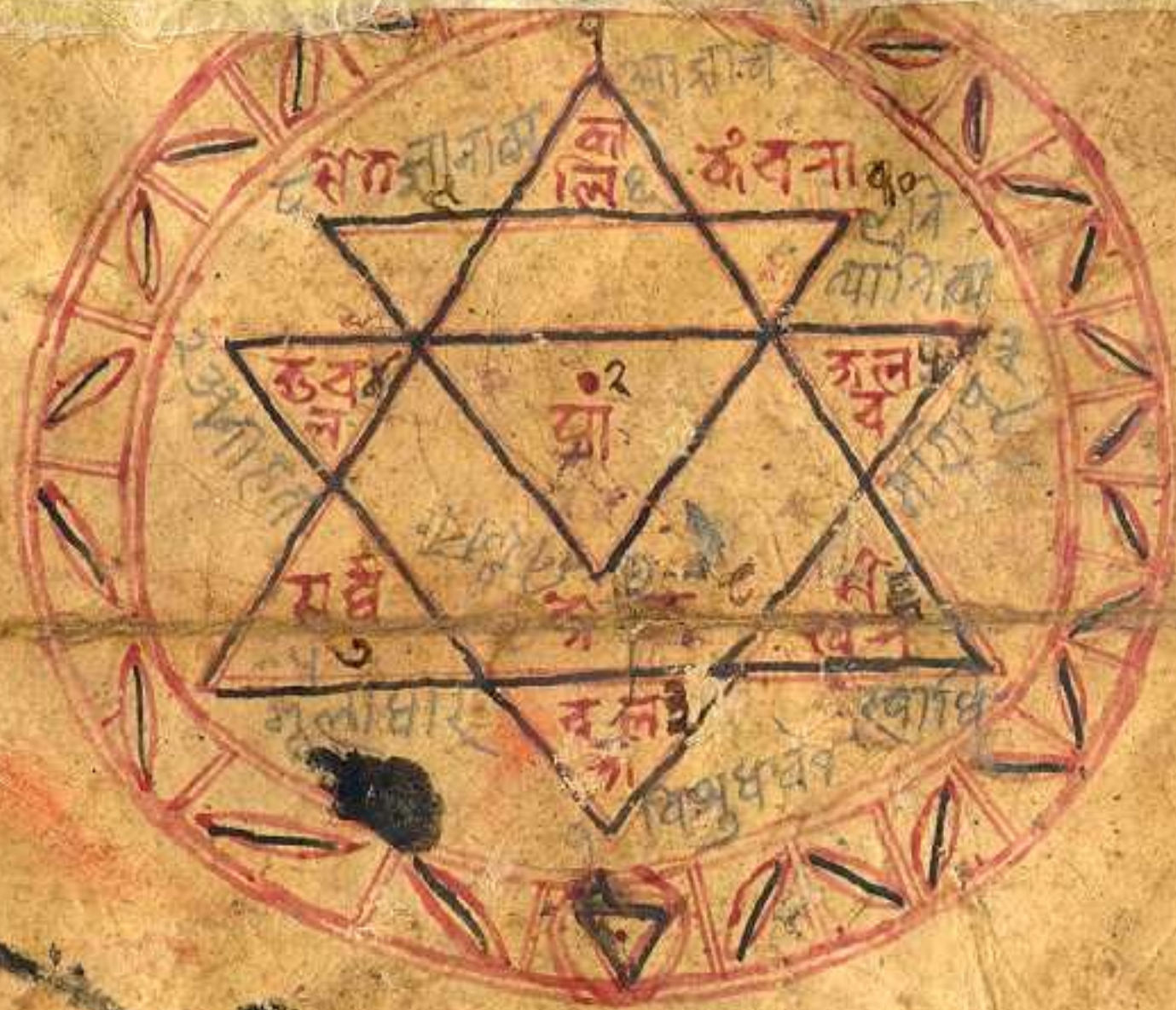
10th. 13th. 14th.



विलयात



समष्टीक १
०
वनि
०



यं वलि



१ वैज्रिय सुन्दवि अद्भुतानि दिप आ गभर्चनं का वयन ॥ वनूकान्
न सान्नुय ॥ वनूथं न कंथनं वाय ॥ दिप आ य ॥ थनलि सवयाय ॥
वैक्रोस्त्रोक्रोक्रो न का द्विदं दनवन उद्यानयि ० सस्ति ना ॥ सिद्धिनाः
थसमायुक्तं निर्मितं यनमा मृत् ॥ वक्र कृत्रिय विद्रुड वेष्टुमेक
लकोवन ॥ माहायाग समुद्यथ ॥ धीयाग यति गृह्णता ॥ स विनायक
सन वक्रना विष्णुनायना ॥ यनयदमवाध्रानि यनाग किनमी सुत ॥

॥ मातृ प्रार्थ ॥ वैक्रोक्रो सव्यामाहामाह ॥ पुनैव वाययुका सक्रिय
नाय सहा ॥ ॥ विनानायादय कानयन ॥ ॥ शुगन्धिमृत्नवाग्निना
यादोय आनिमिस्त्रलि ॥ सुन्दलिनियुनादवि याताद्य केनमानम ॥
पूष्यकाजन ॥ निमन्त्रनमहादविसा गकै गृह्यपूर्वक ॥ पूष्यधूयादिकं
येव सामनस्यं यस्मिन्नगा ॥ आवाहनं तु सर्वथा ॥ श्रीचक्रगणदवना ॥ सान
कविय ॥ ॥ गणपूजायाय ॥ शुभ्रनमस्तो न्यास ॥ नयना अर्चयान्

पूजा कुनसुद्धि ज्ञानपूजा ॥ ॥ षडासनन ॥ बहुस्थित मनुष्यादियुक्त
 नि ॥ वन्दन ॥ श्रीचक्रवन्दनं नमस्तुभ्यं कस्तुलिककुम्भं लोहानयनमदीर्घ
 ललाटं तटकुषणं ॥ ॥ सिंधु ॥ सिद्धवं भाद्र नंदिर्वा वध्या कर्षणवृषिनी
 विवरुस्य यवं भाद्रं रुद्रानविवन्द्यते ॥ ॥ भाद्रनि ॥ तस्मै नार्च्यते न वैव
 मानने कर्षणं स्मृतं निमित्तं भाद्र नंदिर्वा वक्रसीराजवन्दनं ॥ ॥ जयम
 का ॥ यज्ञाय विनंदवशि सर्वयागस्ववृषिनी ॥ यावनं यावनां वै नवनलुस्य
 १ नृविन ॥ ४५ वनतिनके रुद्रगिना यद्ययस्त्रिंशत् यम

निकर्क ॥ ॥ स्नान ॥ कनवित्रजवा जगति वधुर्कं वक्रयागली याविज्ञानादिकं
 यस्य नमस्तु स्थनिवदिनं ॥ ॥ वस्तु ॥ कोमको सूरुविदानमर्घ्यं दिव्याम्वलं
 यद्विनिमित्तकं लज्जादिभिर्नक्तं विभाक्रनाय वस्तुविचित्रं त्रिपुत्रस्वनिनम
 ॥ पूजा ॥ बहु ४ कूटमकुर्न ॥ ॥ कृष्णविनं यागद्वाराय ॥ त्रैवत्रसर्वयदो नार्च
 तत्त्वज्ञानयुवाधकं सर्वत्राकदिनार्थय रुद्रिका रूद्रनिमलं ॥ नसानमना
 कर्षणं यक्षजह्नु यवर्कं निष्कलं सकानन्दं बुद्धेज्ञानयुकासुर्कं ॥ विन
 ॥ ५८ ॥

श्री
 वायव्यस्य

कुतव ॥ याष्टी चक्रसि नि निर्या ॥ कुरुयी ० ययि ० का विद्या नष्टाय
मूकथं पुसनागि नि कन्यका ॥ जूलानरुन नगावा ॥ यि यकन नु मरु
स्वनि । काम्यनीममदायानि सांगया मायमष्टु ॥ ॥ माया कन्दलवा
दि ॥ वाक्का ॥ गान् ॥ ॥ थनलि वट्टक कन गण वट्टा न्यादि ॥ अस्मि
मादि रुतुकादि शीक नु नाथ यनियानिन कथनं यूजा याय ॥ थनादः
युनियाउरु माहामाई नु याय ॥ आवाहन मालनि ॥ यवखलि कमुय

महाद्विप

जायाय ॥ धूय दिय जाय स्तान् ॥ ॥ मन्दवदयक ॥ अश्लकाय ॥ त्रैमाः
अनिमा दिवाग्नुव समुद्रव वाग्विकुनि ४ क्लीकामवाऊ मधीदे वनम म्बुजानी ४ सो
सखिदां यवमहं सकवानिधानी ध्यानमना मनिरुज नियुनारु यार्द ॥
प्रताधियथ रुलदां कुवर्णग्रियानी शीसूद नियनमदि वायनाधिदवी ॥ स
सानसागन समुद्रव लोकदुर्दुर्विदीक्षा नृजननिमन्त्र सास्मनामि ॥ यार्थ
यामिऊगभाह वनूयूजा क्रमन था ॥ नवयुसादगाद्वी यवैरुश्लामियूज

न॥ आश्रयसादयुवना गनआ गवक्ष आश्रयसादययिना गनछुन्दलअ
 आश्रयसादसगण गनदवताना आश्रयसादमयिना समददिददि॥
 ॥ आगिनियुवोदिसर्व आश्रयददिददिका नयन॥ १॥ नमो माहापात्रयः
 उय॥ वेङ्का सो मा जग्निमणुनायदश कलामननम॥ १॥ द्वा दशकना
 मन आदिसमय पुनायनम॥ ग्लं सुयं सुनं निकनमूडा कु मयन॥ ३
 ॥ दशकलामन साममणुलाय अर्घ्या मृतायनम॥ वेङ्कांणी अमन

अमनादव अमनवर्षा नि अमन सावय २ सांशं स छुक्रसायवीभावय
 अमन स्वयेनम॥ वेङ्कां सुंकां द्वा द्वा ज्ञानन्दरुनवाय सुनादव
 नम॥ वाकनसामनाकान सि रूदि न नकनयन अमनलनि
 कस्मिन्न वसुनिकिन्नरुयिनि॥ अमन नमूडायाय॥ ५॥ कास्मानद
 वर्णकासा सुखादवसमादिनी॥ उनामवणदखर्ष सुनादविनमासुन॥
 थनानिलालव मूडायाय॥ वेङ्कांणी रुगणव रुगिणि रुगणदनि रुगणवद

अश्रयसादययिना गनछुन्दलअ

अमनादव अमनवर्षा नि अमन सावय २ सांशं स छुक्रसायवीभावय

रुगमाले रुगआगिनि रुगानि यनानि सर्वनखारु गध्वनी त्रैवृत्तं रुद्रं रुद्रं मूर्ध्नि
रुद्रिन् सर्वानि रुगानि मवसमानय ४ श्रीद्रो वृद्रो श्रीश्रीप्रियुन रुगमालिने
समयादवा श्रीयादुका ॥ ध्यान ॥ त्रैलोक्यं लुप्तं वेसं कासी त्यादि ॥ त्रैलोक्यं मु
क्तं द्रुष्टुं द्रुष्टुं ४ नूनं न लोक काय गुरुग मिनि अननलोक सर्वानि
नी ५ अन नानन्द अननाला यवगिवा नन्दयगगकाला यागिः
नि नीत्यामा श्रीयादुका ॥ त्रिखण्डमूद्रादधयन् ॥ त्रिययि ० मन्त्रवलि ॥

॥ जाय ॥ द्रुष्टुं द्रुष्टुं स्वाहा ॥ त्रै सर्वानन्दमयानित्या कायपूनालि स
स्मिता ॥ यागिनी यवमानन्द सिद्धिन् यिनमास्तु ॥ अरुगन्धदित्यादि
॥ गगाखयनपूजनं ॥ त्रिविष्टुद्वचक्राधनाययादुका ॥ त्रैलोक्यं ॥
विष्टुद्वयि ० चक्रसंस्तु विष्टुद्वजकिनी विष्टुद्वनाथद्वशीयादुका ॥ ध्या
न ॥ सुगानयध्यामागं द्विवा द्रुष्टुं वरुनिवाचनं ॥ त्रिष्टुलं वा क्रमानाचं ॥ गग
नदिवरागिनी ॥ खलान्द्रुगमिनिदवा विष्टुद्वचक्रसंस्मिता ॥ १० स्वर्नय

नमो देवाः त्रिवाणिवा नमो सुत ॥ त्रिया ऊं नि ॥ त्रिवा लाध्वनि गगना ला
क शाग गरुगमिनि जूभन सीवा निना गगना नन्ददव गगना मा चतुन
क कोटि सिद्धि ४ चतु र्षेष्टि कोनि यागिना ध्वनी श्राया इका ॥ श्री स्वनाय व
लिगु द्रु २ रु रुट स्याहा ॥ सर्व संका कानि मूडा दर्शयन् ॥ जायो ॥ स्या स्याहा
२॥ सिद्धि दंखे वनन्दव ॥ ॐ ध्वनं धूमं वज्रं ॥ लक्का प्रदं प्रडा द व वि न
मस्तु नियुना सिवा ॥ श्री वाक्य विष्णु द्वौ नृपदल कमव नक वज्रं नृप

श्री स्वदा गंक यालं त्रिषिषमपिमहा चर्म संधायका ॥ चक्र नैक नयू की
यष्टु जन रुय दी पाय सान प्रस स्या लक्का वदम नो द्या विवि व नव यूषा ज
किर्निवा नव द्या जूगु गन्धदि ॥ १ ॥ नगा कुच वयू जन ॥ ३ जूना ह नव
क्रा सनाय या इका ॥ त्रु क २ जूना ह नयि ० ॥ जूना ह न ना कि नि जूना ह न
श्राया इका ॥ ध्यान ॥ नक वज्रं निरुं दव चतु र्षा रुगिला वनं ॥ यस्तु कं जा यः
माला ये दद रुसं कम प्रु ॥ यस्तु य विन संयूक चतु र्ष दस मन्दिनं ॥ हं सा

यविस्मि नानि त्वत्कृत्तु यिनमास्तु न ॥ त्रिया ऊं नि ॥ त्रेश भा न कृत्तु २ सुनत्र
गर्ह सुर्गला क शा ग गर्ह मा मि नी स्वर्ग मा क ज्म न सु व लि नी स्वर्ग
न न द व स्वर्ग मा व गि स ल क का गि सि धि या मि नि स्वा मि नि श्री या इ
का ॥ त्रेश सुं रु व न मूर्त य व लि गृ द्वा २ रु रु ट स्वा हा ॥ सर्व वा डा व नि मृ डा
र्ष य न ॥ आय ॥ मा स्वा हा ॥ य वि र्ग रु व न द व रु व ल द रु सा ध क ॥ ल क्का स
नान द द वा व शु क्क नू यि न मा स्तु न ॥ हृ य ध नू य नू य नू दि व द न विल सः

दष्टि नि स्या म व र्ण ॥ अ कं धूल क याल त म नू मा यि रु ऊं द्वा व य ना गि न ग्रा ॥
ल क्का सुं काल ना वि य रि नि य नि र्वा नां शु द्ध रु के प्र स स्ता ग्राम द्वा व द्वा व द्वा म
शाम न रु न दा रा व य द्वा वि ना नां अ रु ग न्ध दि ॥ २ ॥ न मा ऊ न व ल य रु य
॥ त्रेश म नि यूल क य द्वा स ना य न म ॥ तं ० म नि यूल क व क्क म णि यूल क ना कि
णा म नि यूल क ना थ द व श्रा या द्वा का ॥ ध्वा न ॥ त्रेश न्द्र हि म सं का स मि न व क
गि र्म म क ॥ शु ति रु स्ता म नी व क्क णि य या न ध्वा ना म न ॥ म नि यूल कि ना व क्क

मकनासनसंस्तिर्न ॥ ध्यात्वा जलचलं दर्वं वरुणा गयुदं धियं ॥ त्रियाञ्जरे ॥
त्रैलोक्ये काविना यूनवन्नयवनत्राक काग गगर्गमिनि यवनत्राकमनसैवानि
नि यवनामकदव यवनाम्ना धादस लक्षसिद्ध यागिनि स्ववाध्यायादका
॥ त्रैलोक्यं जलचलमूर्त्यं वलिगुह्यं २२ रुद्रसाहा ॥ सर्वाकषनिमूढादर्शयन् ॥
जाय ॥ लोमांसाहा ॥ २१ ॥ जलजातसमूहं नयविदुषा यनासनं ॥ यागलक्ष्मण
नसिद्धिं विष्णुं ध्यामनमास्तु ॥ नाकोदिगूयगुयध्र त्रिवदलविनसन्ति ॥

कृष्णकृष्णवर्णं कर्कशं कालिदेव ववरुयकुञ्जकं द्वात्रयं नामदायां ॥ जमया
द्यैः श्यनिना यष्टुजनरुयदीष्टुद्धिधार्त्तकमायां लोतावधकिविलीं सकलष्टुखः
कानि सप्तत्रिंशत्किनालीं जलगाध्यादि ॥ ३४ ॥ ननासखचयुञ्ज ॥ त्रैलोक्ये विष्णु न
यक्रासनाय नमः ॥ त्रैलोक्यं क्रीर्वरं ३ स्वाधिसूत्रं यि ० सूत्राधिसूत्रं काकिनिध्याया
दकां ॥ ध्यानं ॥ त्रैलोक्यं काविर्लोक्यं महासाहं सोनिवर्कं त्रिलोचनं ॥ खड्गखट्वागदसुव
मकायागधनामयं ॥ स्वाधिसूत्रं कनयकसुं कर्त्यं वक्राधनसिर्न ॥ ध्यात्वा ध्यात्वा

१
वैदवर्षा मरुदेष्टव्यं सूचकं ॥ जया ॐ नि ॥ सर्वं नत्वा यत्पूज्यं नमस्ये त्वा क
सर्वं त्वा कशुगुल्यं संवाचिनी मर्या नन्द दव मर्यामा जयं न क सिद्धि यानि
ध्यायादकी ॥ वैष्णवेष्वनाभिदवताये वलिगुद्र २ रुद्रुट सोदा ॥ सर्ववर्षा कनि
मूडादधाय ॥ जय ॥ कूं सादा ॥ सर्वेषां धावनदवै धावनकामसाधक
॥ मरुभाभारुयुष्टामनं नू वै डवुयिनमास्तु ॥ स्वाधिसूनां स्वा यद्वनसदनं
वसिष्ठवदवकांतिनता यिनां राधालयना गिसिष्यगुनकया लारुया

स्या नगर्वा ॥ भदा धातुयुति स्मा मलिमदमुदितां वधिनायुर्वे सन्नी यिनादः
द्युन्नगकां मरुिमनरुलदां काकिना रावयकां अरुगन्धादि ॥ ५ ॥ गतास
र्वचनयुजनं ॥ वैक्लां सोदो ॥ ४ मूनाधान चक्राधनाय नमः ॥ वैक्लां क्लौर्वुं ५ मूना
धानयि ० स्म मूनाधानसाकिनि मूलाधानदवनाथध्यायादकी ॥ ध्यान ॥ मरु
मनकलयुरवायुदुदन्दिषु रुषनं ॥ उत्पलं ० यद्वनसदनं मरुयागुकन
धगा ॥ मरुता सवसमायुक्ता अवधानाय विस्मिता ॥ ज्ञाधानचक्रसंलीनं

सर्ववचनमामरु॥ ॐ या ऊरि॥ त्रैलोक्यं सौ ॐ ॥ त्रैलोक्यनाय नमः नमः
लोकशाशासकैर्ममिनि नागनाक अमृ ॐ नमो दियीनी नागानन्द
दव नागमन्त्रावत्वा वि लङ्काकाति सिद्धिचला वि लङ्कायागिनि ॐ वि
धियादका ॥ त्रैलोक्यं सर्ववचनमूलक्य वलिष्ट द्रु २ द्रु रुट स्वाहा ॥ सर्वाभादिनि
मन्त्रादर्शयन् ॥ जाय ॥ ॐ स्वाहा ॥ २१ ॥ नमः नमः नमः नमः सर्ववचन
योनं ॥ ॐ स्वाहा ॥ ॐ काम सितवचनमास्तु ॥ मन्त्राध्यायक्य

ॐ निदलललिङ्ग पञ्चवकाशिनः ॥ त्रैलोक्यं कामसि सस्र सनिमयिकमल
युक्तकंलानमन्त्रा विज्ञानावाकृत ॥ ॐ ४ सुवनिगवन्त द्याकिविगीन
भास्तु मन्त्रा नमः सस्रका मधुमदमदिनी ॐ विनीतावयर्ता अलङ्कारादि
॥ ६ ॥ त्रैलोक्यं कावियुक्तय ॥ त्रैलोक्यं आस्तवकायनम ॥ त्रैलोक्यं श्रीरुक्म आस्तयि ०
स्तु नास्तु राकिनि आस्तनाथदवध्यायादका ॥ ध्यान ॥ नीना ऊरनि रुद्र देव
उर्वीरुनिवाचन ॥ स्वर्ग रुद्रक धर्मेदव ॥ ॐ स्वाहा कलहय ॥ यन्त्रलं अलिनिनः

वे ३६ ४२४ साग नाविनी ॥ कान वद कुरुदि न्यां काल कालं विनासिनं ॥ जया अलि
 ॥ ३ कालिका यालिनि रुं रुं ॥ वं डी धी धी धी धी कालि कालि डी म हा कालि डी
 मी सल्लानि न का त्रिनि रुं न क क क म म विदवा ३ डी मी मा य ध नु डी ग न व ४ डी
 ४ डी रुं रुं रुं दय द नि प्री या इ कां ॥ ३ खु मा हा कालि मूल य व लि म रुं २ रुं रुं रुं खा हा
 ॥ मा हा डी ध म म डा द र्श य न ॥ जय ॥ धी खा हा ॥ २१ ॥ या स न का ग्नि क रु ना द सिः
 ना हा स वू यि नि ॥ सा मा र्क व द्धि ति य र्थ ॥ थ लि ना वि नि न का म दा ॥ ग रु क काल क य

वि कृति न द य ण द य ठा ठा य र्ण द द व लु ठा का नि स्मा ठ य निं सक व वि व ध रु कानः
 नालि न लि र्ग सा धा ला सर्व वि श्व क य क न म यि य ४ काल कालि क ना ला का या धा व
 न माना कम ल क ल न मा द्या नि नि कालि का का ॥ रु म ध वि नि द य र्थ नि त्र य न ल सि
 १ गी शु क्क व धु र्क ना र्ज वि द्या ना र्ज न मू र्धा उ म नू क क म र्च वा क्क मा ली कः
 नालं ॥ य व क्क म र्ज स र्का रु स व क्का दि हा वि का वि डा न य स क्का सक ल स
 न स र्गा हा कि नि कि हा व य र्का अ ल ग धा दि ॥ ६७ ॥ अ णु अ णि का न स य

श्री न य न ल सि ती २

जय ॥ त्रैलोक्यं निलज्जं नयद्रासनाय नमः ॥ ध्यान ॥ सामविष्णोस्सुसंकाशं
वक्राण्डयुग्मपादकं ॥ कामर्गं सानेकिदवि वक्राणं किं नमास्तु न ॥ गीयाञ्ज
वि ॥ त्रैलोक्यं ४ मनुनाञ्ज ४ विवाञ्ज ४ वधवित्रैकं ॥ आभनत्वाधियुगयकिः
याष्टकि यनायष्टायादका ॥ त्रैलोक्यं जन्ममूर्तं यवलिष्टक २ रुद्रस्वाहा
॥ ५ ॥ सर्वकवनिमृदादर्थं ॥ त्रैलोक्यं ॥ ५ ॥ स्वाहा ॥ २० ॥ जन्ममूर्तं नामसिद्ध
वि ॥ ५ ॥ सर्ववक्राण्डयुग्मपादकं ॥ नागसौकर्यनाडि सि यनासौ हाठ्यदायिना

जन्ममूर्तं ॥ ५ ॥ वामजन्मपाकपूजय ॥ त्रैलोक्यं जन्मपाकज्ञानान्ननमः ॥
ध्यान ॥ कामर्गं दिवाकनारासं सर्वज्ञानिमन्त्राद्वनं ॥ विन्द्याण्डसूत्रायुग्मं निला
यल्लङ्घनं ॥ त्रैलोक्यं जन्मपाककिदवि विष्णुसुकिं नमास्तु न ॥ गीयाञ्जवि ॥
त्रैलोक्यं ४ कारुय २ कारिनिर्दहसो विद्यातलायकौ द्रौ सूर्यविम्बवावि वक्राञ्ज
विज्ञानाष्टकिष्टायादका ॥ त्रैलोक्यं ५ ॥ जन्ममूर्तं यवलिष्टक २ रुद्रस्वाहा
॥ त्रैलोक्यं सर्वविज्ञमृदादर्थं यव ॥ त्रैलोक्यं ॥ ५ ॥ स्वाहा ॥ नाञ्जिनाः
नाह

॥ जया ऊँ वि॥ ॐ ह्रीं कामध्वनि ॐ नमो का० मयुध ॐ डां डां क्रीं वूं स० ॐ ह्रीं ह्रीं ॐ
समया न काय वलिष्ठ ॐ २ ह्रीं रुट स्वाहा ॥ नै क्रीं सी सर्वथा निमून्दा ली द स
यत् ॥ जाय ॥ ह्रीं स्वाहा ॥ शां ॥ समया न क नी द वी प्रसा न्द पद मा ह्ना ला
॥ ले आ सय न्य ली दा ना नं संपूर्णं नु प्र सि द म ॥ ॐ नी ना म्ब क य त्रि या र्व नी
सति नै ला क्क मा नं ॥ धिव शर्वा णा गि य न रु व नि व न द अ ष्ट म हा सि द्ध य ॥
हो म ह्ने न व व णि मा नु स क न काल क य धू नी नि त्व त्या द यु ण ना प्र स न्न म न सा

पर्याकलम्भादिमां॥यनानन्दयदाद्वाद निवाषादसुधासिना॥उद्यदादित्य
संकासाःश्रीसुन्दरिंरुद्रास्यदं॥विनामनिगणखायमान॥ ॥नतात्रमयू
रुय॥त्रैलोक्यैः॥सर्वसंक्रासनायष्टायादकां॥त्रैलोक्यैः॥सौदरेसरेजानन्दरुवेवा
यसुधादयेनम॥त्रैलोक्यैः॥जुक्ता॥जुमनजुमनाद्रुवजुमनाकषिणाजुमनः
ष्टावशः॥रुसः॥सः॥सः॥सः॥यनामनाष्टायादकां॥ध्यान॥त्रैलोक्यैः॥सुनिहादुवा
विद्ययात्रुवनारुय॥भादिनिंदवदविनां॥जुमनष्टावशनाम॥त्रयाः॥त्रैः॥

ॐ नमः शिवाय ॥ कलकं राय सदा नमः यनाज्ञानशयाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥
विष्णु यज्ञे नादविष्ठायादका ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥
रुद्र ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥
तम नमः ॥ यष्टयाससमं बुद्धकावर्णद्वययिनि यना ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥
त्या नमामि स्नानदायिनी अर्कगन्धदि ॥ ॥ तमादि य पूजय ॥ वैष्णो
॥ दिव्यास्नानमया आनिमलुलगायादका ॥ वैष्णो सो ऋत्विज ऋत्विज ऋत्विज

नीकलक्ष्मीकामाग्नयस्वाहा ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ नकाया ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥
वना ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥
मूकूटं कलुमसुष्टुसुक्तं भवसुवनदारुय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥
॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥
दददुममनिपुत्रसदा ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥
हानिकाये ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥

कामधनि समयादवि वक्रधनि समयादवा रुठास्थानि समयादवा
उनियविक्र वक्र वक्रधनि समयादविधाययाइकी॥ अग्निवउं जानमय
अयन॥ वक्र॥ अग्नयदिया करुहा लिकाये उं क्रि नवलिक २ रुं रुठ
हा॥ आय॥ ३॥ दू॥ साहा॥ २॥ गा॥ उयलि सि निसं हाने लमवसर्वद
हनी॥ नआवा ३॥ यिकुग सर्व धाधु नभाहुने॥ अल गन्धादि॥
नगादियकयलयामन॥ वक्रा सो क्रि न वक्रा क्रि न क्रि न कामाग्नयमा

रा म्ना दू॥ दू॥ साक्रा ३॥ धाल ॥ क॥ नदी दि फिना नवि धाणि क॥ ग
युहु ३॥ ३॥ नय ४ यन वक्र क॥ दासु वनिय नमानन्द क॥ मि का॥ गि
निकियन विवलनना विधमंदन सर्वसु रुकास्य रुनसिद्धदि विनन
गवनि॥ ॥ दियद्वदद सयुत्रन॥ द्रागामनुनाजायनम॥ ३॥ रुं रुं
लका म्ना आदिकियनाये २॥ वेत्रमद्रु कामनियनाये २॥ वेत्रा सो ४॥ सो
नियन रुं वयो २॥ वेत्रा स४ वाकनियनाये २॥ वेत्रा सो मद्रालका

8247

[illegible]

धानित्याकलाष्टा ३॥ वक्राक्राष्टा ४॥ त्रियूनमुद्राष्टा ५॥ त्रियूनमुद्राष्टा ३॥
 दैर्घ्याष्टा ४॥ त्रियूनवाणिनि नित्याकलाष्टा ३॥ दैर्घ्याष्टा ४॥ त्रियूनवाणिनिः
 त्याकलाष्टा ३॥ दैर्घ्याष्टा ४॥ त्रियूनवाणिनि नित्याकलाष्टा ३॥ दैर्घ्याष्टा ४॥ त्रियूनवाणिनिः
 दानित्याकलाष्टा ३॥ दैर्घ्याष्टा ४॥ त्रियूनवाणिनि नित्याकलाष्टा ३॥ दैर्घ्याष्टा ४॥ त्रियूनवाणिनिः
 दवदवाम्मदिनि त्रियूनवाणिनि नित्याकलाष्टा ३॥ दैर्घ्याष्टा ४॥ त्रियूनवाणिनिः

मनुनयुजय ॥ ॥ थनावेन्दव चक्रस्युजायाय ॥ बहककृष्ट गण सि
द्धि वामुन्दा यागिनि केन विसकयुजायाय ॥ ॥ थमनुनदिय प्रकाल
यत् ॥ त्रैलोक्यो ४ ननानुमाला कुकुलनरुखिग माहाकोविनामहावक्त्रवा
दिनि महाधन्वाभादिनि सर्वशोभायुद अस्मदियं सनिर्नृजमयकनर
इर्जनान्नहन २ महियान्नकाकश्यनचक्रकाक २ रुय २ रुयक विगगणग

मिनी गेल्लाकसामिनि यौं रौं कौं प्रा केन वादियुन सुन्दलियु सार्द खादा
॥ ॥ दिययाय ॥ स्व रू रू रू सि कोनिक सर्वर्षा स्वस्ति मनुयदाद
य ॥ साधका रुदया रुम् आरुलिनानमास्तुन ॥ सुनयनियुनलका वृरुः
ननस्यलका ॥ यसलनिनि रुका रु रुयदेव ह्यमाथे ॥ वरुविविध कलानी
यागेरुनस्यनस्य ॥ निरुवनविदिनासा रुमृगसुलिनाद्या ॥ कृणुनिविन्दसं

कुनं शकि द्विययुकाऽर्कं ॥ दिव्या स्नानयदंशमर्कं कामभाकृष्टिवयुदं ॥ अत्रिः
यत्ननसम्भर्तं कामवद्विद्यदि फं निखिलनिमिलदखं नास्यं भवलाकाऽर्कं ॥
दहसि सकलयायं यावन्वावना नी हिरुवनकुलदियं वद्विचन्द्रार्कं नृपं
॥ गाय्वा ॥ अनयनियुतानि मिहलं स्नानं युका सा स्यदं अन्तस्त्रुमयं सुवः
॥ उचयके कर्पूनवकियुतं ॥ चिरुवाधकर्तं समस्तसुखदं दानिददखं

यदं दिवायं सुनकर्णका विनयिनं श्रीसूत्रनियियनं ॥ ॥ कालिनि
मूढादहर्षयत् ॥ ॥ दियनस्नानयाय ॥ ॥ ललितानमूढायाय ॥ ॥ उक्ता
सो ॥ ॥ कौतुकावनिवृत्तिं नित्या कामध्वनिः सुसर्ववर्षकनिः ॥ स ॥ श्री
नियु ॥ ॥ लेकेलवि विध्वं कौणियूनसूत्रविदविः पुसन्नारुवः श्रीयाद
का ॥ ॥ नना गायलिनत्रयलया ॥ ॥ अनियूनदवि विद्वद् कौः

कामध्वनिधिमहा. सौ ४० न्नाक्रि नयथादया ॥ धान ॥ जय नय ॥ जय
वानरु कल्यो अमृकमा सत्यादि ॥ ॥ मन्मन्त्र समयविद्या वाननया अव
साधयाय ॥ ॥ सुस्मिष्ठिर्लनय कनध नरुवन सर्वदवायिय भु ॥
मिद्धि नदवरुगा मूलमृनिसगना साधका सर्वकामा ॥ सर्वक मा नृका
सकल गुणमयि विश्वसं सानरुगा सांनसं सान निमिनव रुल लैदियन ॥
सान

विमर्कनयोय
नमामि ॥ जल गन्धादि त्यादि ॥ श्री स्वष्ट्रामृद्रा दर्शय ॥ ॥ यनामयाय ॥
मन्मन्त्र समयविद्या णरुयन ॥ विमर्कनयाय ॥ ॥ आसुगुयद वादरुमनका
त्य ॥ ॥ वे अनंदसा न्दयलमा त्यादि ॥ ॥ वैकुंठो सी उं ड्री आनन आव
दिस्तुत्र कनदिय कृला रुव ॥ मना धालय नं श्री नि ४ सा रुं धा आनि विन्दुः
कं ॥ वेयका साका धरु सा स्या मवलं वामन ४ ४ ४ वा ॥ धमा धमा रुविदिये

आत्मा नो य इहाम्यहं ॥ ॐ अन्धवानाह कथा स्यादि ॥ मासन कथा स्यादि
॥ दियवाथ ॥ ॥ मन्त्र हल सल ॥ रुक्मनथ मन्त्र न ॥ ॐ अग्निहूयाह सा न
॥ शागयागकायावतयेनयाय नयै नयै ॥ ॥ गान ॥ ग्रामरुक्मन
यविवस चन्द्रा मृत्या विन कृताधिष्ठन आग्निनि गणमहासिद्ध ॥ समा
मिर्त ॥ ज्ञानदागमय न्नवाभकमिदं ग्रामरुक्मन अग्निर्गन्तव्यं

समस्तु जगती सो कायचन्द्रसदा ॥ ॥ रुक्मनयाय मन्त्र हल सल ॐ रुक्म
न ॐ जम गारुवाय सदा ॥ ॥ श्वचल ॐ वामनकायाव रुक्मनयाय न
क्रा सो ॥ लग्न सुक्मा सुभदासि ॥ ॐ रुक्म ॐ सूर्यकं ॥ नमा र्श रुक्मया मय
वन्दिय इहाम्यहं ॐ क्रा सो यच ॥ सदा ॥ ॥ शागयागकायाव नयै नयाय ॥
सर्वा मायमिलकला कचकला कौटु रुच आग्निना ॥ ॐ आयु मरुदुकिन
वन्द

लो. बुद्धादिहिसविते ॥ आना. रुवविनी ॥ सुता. विमलगा. मत्यादयः सर्वदा
लोकाणां सुखचक्षुः. विनविनं. यार्त्तदिनीयं नमः ॥ २ ॥ रुचनथवमनुनका
याव. रुक्मनयाय ॥ वेङ्कासौ ॥ सर्वतः कृपुर्न धारं. जागर्तकालत्रयिनी. नमो
लविदायुर्कं. प्राप्ता. लोपुशुहामादं ॥ ॐ नमः कृत्वं शं हामि साहा ॥ ॥ नये
॥ मर्शमाननसा रुहं. रुविहचवद्मादिदवाचिनं. मडामेथूनकर्मधर्म

दं. कलामृत्तिकामर्कं ॥ मीससूकमत्रमे. लमलसेद्वमेष्वदि वीयतं. सर्वे
वमनिध्वने ॥ निरुगगा. यार्त्तनृत्तिर्यनमः ॥ ३ ॥ रुचुलथवमनुनका याव. रु
क्मयाय ॥ वेङ्कासौ ॥ कालत्रयसमृत्यर्न. मसात्वर्गमनुनयुर्कं ॥ ॐ लोपुर्वी
मकयेव. ॐ साहासं शं हामादं ॥ ॐ आवर्तुलाय साहा ॥ नयन ॥ ॥ ददः
सुखिलदवगा. गजमूखा ॥ कृपाधिया रुचवा ॥ यागिन्यावद्काध्वय. कृपि

न नातु नायि सावाशुका ॥ अथ कुचन खचन ध्वजना वताल कावसुका रु
का स्थ कुचपुतुक स्यापिवन ४ ध्यानं चतु स्कं नम ॥ ४ ॥ संसल थवमनु नकाया
व रुक्कयाय ॥ वक्रां सो ४ णाघनं ४ गवत वी न सधा उवि नाजिनं ॥ अनाम
पुक्कहामाद्य उं रु स ४ स्वाहा णाघनं ॥ उं वायं या ना ला वा स्वाहा ॥ नदन ॥ धा
मीगनया न स विनन स म् थं जयं जय न कामा के दन ना जवस्य कन

दिव्या गणना धिनं ॥ धाकि न्ना णि जयं वुचन दिनं साम् कनं सी रुवमं रु
लाज सदिनं वार्ग रु अय नै म् ॥ ५ ॥ सर्वे च न थवमनु न काया व रुक्क
याय ॥ ॥ लिक्क शिकान अस्का न अस्का दन चतु द्वा न अनाम नानः
लिखिन ॥ दिप न न क मा नाय स्य न ॥ पूजा याय ॥ रुल विर्मननं ॥ ॥ उः
मनं कान य ॥ ॥ ॥ उद्यत्य पुक्क लानिधि सवदनं रुक्क पुसं न सदा

समूलाख्यपत्रका निसुखमा धिक्कावदं कृष्णं ॥ सानन्दं कृष्णमन्दरा
समकृतं न्यायं कुरुर्वकोत्तुर्कं कृष्णकानसूदताय किंशधिरा यष्टुस्माना
म्यवत ॥ नमस्तु च नृथन दवदविसमागतं ॥ दर्शनं यत्नं नृथनं कृष्णं
माकदायकं ॥ आगिनिद्राय ॥ नमस्तु च ॥ यानिमद्राकडाव लिंकार
वान ॥ यासनयाय ॥ गान् ॥ त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं

वनआयनकालिकालिमहाकालि चनृकनिर्दंसादा ॥ वानाहाकर्षं अ
द्यादिमासनकृष्णत्यादि ॥ त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं
कामाग्नयस्वाहा ३ ॥ नृथन ॥ ॥ आकाशादिविस्तृत्यं चतुर्पर्वतत्वात्मः
दीप्तं वातुर्वदनसासुखाविमृदिनं सातुयत्नार्चिनं ॥ मूर्त्तीवद्वामयं यस्य
नवदनीं शक्तिः स्वयंकुरुर्वं हनस्य त्रैलोक्यं यविगुजगती वस्यवनआगिनी

॥३॥ गंगास्य सर्वमर्नकालय ॥ ॥ गंगामाहायानकायन अविशसवविय
 उकालवायवित्रत्यादि ॥ ॥ त्रिकमुद्राय ॥ विनियानत्यादि ॥ पूजायाः
 अनूकामनवाक ॥ ॥ मन्त्रमोहननेकन कलिमलंक काननमहद्वेषध
 रुकिमुकिपुष्टान् शक्तिशिवद सर्वान्नकसंश्रिय ॥ वज्रुषा उष्टाददधं द
 शकनेहानप्रदसंश्रयन यार्णनानमयं यवित्रुगगा वस्यंयनयागिना ॥

त्रैलोक्योविद्व २ सर्वकानिनीस्वरा ॥ ॥ ॥ सनत्र ॥ अस्माविंसनिकर्माधनः
 त्यादि ॥ गन्तव्यं गुनां त्रैलोक्यं युगनं मित्रगगानिर्मिलं मय्यं सर्ववनाच
 ननीसुधया स्वाहान्ननयोश्च ॥ विद्यावन्द्यमय यनावित्रयुगा मानन्द
 मेष्टयना यार्णनानमयां यवित्रुगगा वस्यंयनयागिना ॥ त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं
 मय २ स्वाहा ॥ ६ ॥ कवयासय ॥ अविनाश्व त्यादि ॥ अलिपिधिनयन

नक्रुडसाकिनि यनिवृत्तं धीरेन वा त्रिविधं ॥ स्वर्गवाप्तिन सा नला नलकन
आदिशुका लालिता सुंका सुलगण ॥ ५५ ॥ ०३ निना स्वक्रुडकामना ॥
या गला सादृश ॥ ५६ ॥ ०४ जनागण को नि कि मनुजा ॥ ५७ ॥ ०५ नला स्वान
मदिना सा सर्वदा पातुन ॥ ५८ ॥ ०६ यिव लुदवना सर्व यथा च द्रव वस्तिना ॥ ५९ ॥
०७ ॥ ०८ ॥ ०९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥
२१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥
४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥
६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥
८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

नमः ॥ १०१ ॥ १०२ ॥ १०३ ॥ १०४ ॥ १०५ ॥ १०६ ॥ १०७ ॥ १०८ ॥ १०९ ॥ ११० ॥ १११ ॥ ११२ ॥ ११३ ॥ ११४ ॥ ११५ ॥ ११६ ॥ ११७ ॥ ११८ ॥ ११९ ॥ १२० ॥
१२१ ॥ १२२ ॥ १२३ ॥ १२४ ॥ १२५ ॥ १२६ ॥ १२७ ॥ १२८ ॥ १२९ ॥ १३० ॥ १३१ ॥ १३२ ॥ १३३ ॥ १३४ ॥ १३५ ॥ १३६ ॥ १३७ ॥ १३८ ॥ १३९ ॥ १४० ॥
१४१ ॥ १४२ ॥ १४३ ॥ १४४ ॥ १४५ ॥ १४६ ॥ १४७ ॥ १४८ ॥ १४९ ॥ १५० ॥ १५१ ॥ १५२ ॥ १५३ ॥ १५४ ॥ १५५ ॥ १५६ ॥ १५७ ॥ १५८ ॥ १५९ ॥ १६० ॥
१६१ ॥ १६२ ॥ १६३ ॥ १६४ ॥ १६५ ॥ १६६ ॥ १६७ ॥ १६८ ॥ १६९ ॥ १७० ॥ १७१ ॥ १७२ ॥ १७३ ॥ १७४ ॥ १७५ ॥ १७६ ॥ १७७ ॥ १७८ ॥ १७९ ॥ १८० ॥
१८१ ॥ १८२ ॥ १८३ ॥ १८४ ॥ १८५ ॥ १८६ ॥ १८७ ॥ १८८ ॥ १८९ ॥ १९० ॥ १९१ ॥ १९२ ॥ १९३ ॥ १९४ ॥ १९५ ॥ १९६ ॥ १९७ ॥ १९८ ॥ १९९ ॥ २०० ॥

वदनतलचाय न्यमिनिभ ॥ पुसिदयनदवन ममदिदियुसुलं रुयं विदान
य ॥ दलिदगां दलय दही सर्वारूतां विधदि कनुषानि चवनययदय
गमस्यं विदानि नऊनामृ नियूनसुन्दनिष्टायन ॥ अलगभयस्यधुय
दाय अर्थन युजाविधानं न सर्वपलियूनमधु कमध्व ॥ गात्र ॥ युवक
नवीचक्र सर्ववर्नादिजायन ॥ निर्विद्विह नविचक्र सर्ववर्नादिजायन

॥ म. व. ला विचक्रसः सर्ववर्णादिजायना ॥ चक्राकुचगतसर्वः सर्ववः
नां यथक्वर्णयनसुनं ॥ शामाननियूनगादि यननिर्वाणदायनि ॥ शा
गुभाध्वननाम्नाऊ सिद्धासिलयसादतं ॥ अज्ञाननिमिना अहं नजाना
मिमरुसुनि ॥ कर्मणां कृपया स्वामिन् कर्मणां कर्मणां धिव ॥ विधिदिनः
मनुदिनं उद्यदिनं यनध्वनि ॥ ममदिनं सदा सस्य कमस्यपनमध्वः

निःआवाहनं च पूजा के न जानामि महश्च निः॥ मम दानं सदा सस्य क्रम
श्च यनमश्च निः॥ आवाहनं च पूजा के न जानामि विसर्जनं॥ न जानामी
विधिश्चैव लीला नित्यलमश्च निः कर्मनामनसा वाचा लीलाना न्यागति
मग॥ अल्लश्च नष्टा कुतानी दुष्टं लज्जगदिश्च निः॥ दवा दानाश्च शाका च
दव सर्वमादं जगत्॥ दवा जयति सर्वं आ दवा समदश्च न॥

मूढालायनया हाव विस्कारु न्य॥ ॥ नगा विनशा अंकानयत्॥
नयन॥ यानि प्रनासन स्था त्यादि॥ ॥ धलि मूल कलन नय इदं दा
या स्म॥ शिवसक्तिया काय नयनयाय॥ जयलिका याय त्यादि॥
कनक पूजा॥ ॥ शुभ्र नमस्कारं न्यास॥ कैजसा यरुत ३॥ कौकनिनः
कानम॥ किं अनामियनम॥ कूमधमायनम॥ कै नर्क निनम॥ कै जयः

सायरुत ॥ कं अस्य रुत वडुदिसु ॥ ॥ अलयात ॥ अद्ययात ॥ रुतसुः
धि ॥ आर्मायुजा ॥ ॥ आवाहन श्रीसंवर्त ॥ निधवयुजा ॥ ॥ आसन आधा
लस्कनय त्यादि ॥ यजन वक्रान्यादि ॥ असिनां गदियुजा ॥ उच्चिरुवादा
लिनियाइका वनिगिद्र २ सारा ॥ यिसाविनियाइका वनिगिद्र २ सारा
धुमस्विदवियाइका वनिगिद्र २ सारा ॥ नया ^{द्वि}अलि ॥ काकिं कं कं कलं कं

ध्वनि कलंकस्फुटिसहिनायुयाइका ॥ धनं वलि ॥ लाकमाहावलिनधूनक
॥ ध्वयदिय नेवद ॥ आय कं सारा ॥ तात ॥ श्रीसर्वता वदसदा त्यादि ॥
१ वम्यक कलिका गोर्न वो श्री नचिरु सारु कजनगाया १ विरुसरु ऊ १ सोर्न
योर्न धुं दहमी गिबु नीमि ॥ उपनिषध था गार्न रुवना धार्न सदा दया दार्न नार्न
नध्वनिगार्न वार्न वार्न रु ऊ मरु सार्न ॥ १ १ धन १ कलारु नर्ण १ गदा वनर्ण स

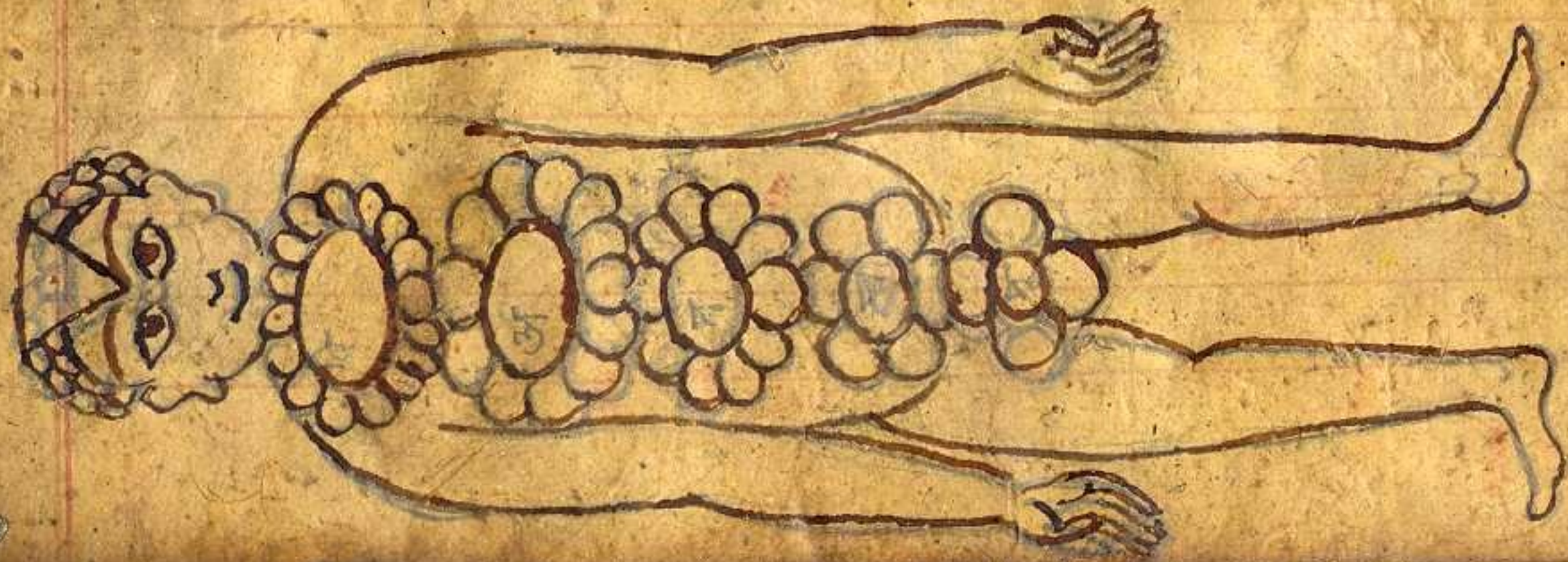
मन्त्रसकवर्णं ॥ अन्वर्णं गन्तव्यं कामलवर्णं मरु सुवर्णं ॥ आदत्त
नगदो रोग्यं ॥ ४८ ॥ अन्वर्णं नवस्य न्यदत्त वेनाग्यं ॥ उरुद्रितन राग्यं कामकलय
कयालि सौ राग्यं ॥ आवनी विल्लितकवनी ॥ मंमयि विदमदनी ममलिवि
मन्त्रनी वलिदु क्रिया ॥ अज्ञी कृतकलरुझी कृषितक वीझी कृतसमी मनामि
मन्त्रा ॥ गन्तव्यमयधनिवर्णनी वीष्मस कान्ता नी नी नी ॥ ४९ ॥ मन्त्रः

स्वार्णं स्फुनरुवर्णनी नमार्कवकान्ता ॥ ५० ॥ कावर्णं अन्वर्णनी मयनिषदद्या
नकलिकलकषी ॥ आगमविधि नमयूनी माद्या मन्त्रविहावय गोनी ॥ अन्व
नटद्यटितथाटी नालायला गन्तव्यं का ॥ वीष्म वादनवला कस्यितगिनसन्त्र
मामिमार्गगा ॥ नवनवनवागन्तव्यं सजीतसन्त्रावासनारुझी स्फुनरुवय
निवमदझी ममगिनमझी कन्ताउमार्गगा ॥ ५१ ॥ अन्वर्णनी पुष्पनी सुनस

दा॥ ॥ कलंकशाय नावर्लंदद्या विषाजन ॥ वाचनविय उ कालं वायनि
र्जं ह्यादि ॥ ॥ मन्दनशाय मनाविय ॥ याथनायाय ॥ विद्वान् नवर्द्धन
वस्त्रि शिवं रुवतु सर्वदा ॥ नमस्तुते नवर्द्धन नमस्तुते नमस्तुते ॥ सारि
विसगना सर्वं ददद विसमाशाना ॥ यथादशाययुक्तं न शत्रुशिवव
नृशाना ॥ न्यनाधिकं वयुजाया यदिच्छिद्युजायत ॥ सम्यं लुं रुनवि

दवि कृपया कुरुमयुता ॥ ददम्भुजसिनादद्या यद्यचित्तस्तथा कना
॥ अज्ञाननिमित्ताभ्या मया किंककुशाकृत ॥ गच्छगच्छयस्तान् लसस्त
नंगनानय ॥ युजावाधनका वयु पुननावि जयिरुव ॥ ॥ थवश्च सत्रा
नामस्य कुविनता नय ॥ दवी नमस्तुता नयाय ॥ शिवस्तुतिस्त्राय ॥ अजमा
न ॥ दधूयामना नयुदवतावि ॥ शुभ्या नावि स्तुनियानावि सकलं नाविय

॥ शनि कनसाल जमयावाल सत्यचन्द्रिय जागन्न समाक ॥ ॥ समन
 ॥ ६३ वैसाय शुभ ॥ ॥ कमावाक जय नामन वाया ॥ धनका वैसाय
 शुभ यावदुदणिक सा निन क्रय यलिव जाय कथक नम हानक आ
 दिले वालका क्रुधूनका कथा ॥ शुभ मस्तु सर्वदा ॥ ॥



पु ३ जनामास
मी ४ नाकि
मी ३ कस्तुनि
मी ३ नूयकसन
मी ३ शाखन्द
मी २५ अशुन

१ नासाक
कस्तुला
कस्तुन
कयूल
शाखन्द
नाकि
अशुन
हिल

२ जनामास
कस्तु मी ३ वासास
कस्तु मी २५ कयु मी १
नाकि मी २
वान मी ३
अशु मी ३
हिल मी ४

मी ३ कयुन
मी २५ कस्तुनि
मी ४ शिव
मी ४ कसनला

शाखन्द मी ४
अशुन मी ३

ASIA BUREAU

1.428